ॐ

सनातन संवर्धिनी

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब,(पंजी.) नई दिल्ली

महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी

संस्थापक

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी

संयोजक

(कार्यक्षेत्र: दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)

मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011-23586251, 23584016

शाखा कार्यालय: गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष: 0172-2543283

सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार: 01334-261702

E-mail: sdprsabha@gmail.com

भारत रत्न
महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी

संस्थापक
श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी)
नई दिल्ली

सनातन संस्कृति के पुरोधा एवं महान स्वतंत्रता सेनानी
महामना मदन मोहन मालवीय जी को

राष्ट्र के सर्वोच्च सम्मान **'भारत रत्न'** से विभूषित करने पर

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी
एवं भारत सरकार को कोटि-कोटि धन्यवाद

''शिक्षा वही जो चरित्र निर्माण करे,
व्यक्ति एवं समाज के कल्याण के लिए चरित्र निर्माण
बौद्धिकता के विकास से अधिक महत्त्वपूर्ण है''

सौजन्य : श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) नई दिल्ली

संपादक मण्डल

संरक्षक
डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल
डॉ. नन्द किशोर शर्मा
प्रो. पी. के. भारद्वाज
डॉ. भारती बन्धु
डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल
श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी
श्री उपेन्द्र शर्मा
श्री सरदारी लाल गोस्वामी
डॉ. देश बन्धु
डॉ. राज पाल विज

सम्पादकीय

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) ने **'सनातन संवर्धिनी'** नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन का संकल्प लिया है। देश की भावी युवा पीढ़ी को सनातन मूल्यों, संस्कारों एवं परम्पराओं से अवगत कराते हुए उनमें सनातन धर्म के पोषण, परिवर्द्धन एवं संरक्षण के लिए प्रतिबद्धता पैदा करना इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है। एतदर्थ इस पत्रिका में वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, गीता, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद आदि विविध शास्त्रों से सम्बद्ध ज्ञानवर्धक सामग्री और उसकी आधुनिक युग में प्रासंगिकता एवं उपयोगिता सम्बन्धी जानकारी दी जायेगी। इससे हमारे युवा सनातन धर्मियों को सनातन धर्म की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की महत्ता, वैज्ञानिकता और व्यावहारिकता का सहज ज्ञान हो सकेगा। इस पत्रिका में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं श्री सनातन धर्म महावीर दल पंजाब तथा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के अन्तर्गत किए गए विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक समारोहों व आयोजनों की रिपोर्ट के साथ-साथ स्थानीय सनातन धर्म सभाओं, महावीर दल घटकों एवं स्कूल-कॉलेजों की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों एवं विशिष्ट उपलब्धियों के समाचार एवं रिपोर्ट भी प्रकाशित किए जाएंगे।

इस अर्द्धवार्षिक पत्रिका का प्रथम अंक प्रतिवर्ष श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) के संचालक ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी की पुण्य तिथि के अवसर पर 10 जून और दूसरा अंक प्रतिनिधि सभा के संस्थापक भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी की जयंती के अवसर पर 25 दिसम्बर को प्रकाशित होगा। इनमें प्रकाशित होने वाली विषय सामग्री एवं लेख आदि प्रत्येक वर्ष क्रमशः 30 अप्रैल और 15 नवम्बर तक सम्पादक के पास पहुँच जाने चाहिए।

इस महान एवं पुनीत कार्य की सम्पूर्णता के लिए आपका सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। इस कार्य हेतु आप यथा- समय सम्पादक मण्डल के पास अपनी संस्था की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों एवं गतिविधियों की जानकारी भेज दें। इसके साथ ही आप पत्रिका में छपने हेतु अपनी सभा एवं संस्था की ओर से विज्ञापन देकर आर्थिक रूप से सहायता प्रदान करें। आशा है इन दोनों ही स्तरों पर अपना बहुमूल्य एवं सक्रिय सहयोग देकर आप प्रतिनिधि सभा के इस पत्रिका प्रकाशन संबंधी संकल्प को पूर्णता प्रदान करेंगे।

प्रस्तुत अंक सनातन संवर्धिनी पत्रिका का प्रथम अंक है। इसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए सनातन परिवार हर्षित और गौरवान्वित है। पत्रिका के इस अंक में ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज के तप-त्यागमय जीवन एवं उनके विविधवर्णी सेवाधर्मी व्यक्तित्व को शब्दबद्ध किया गया है। ''अल्पारम्भः क्षेमकरः'' के सनातन सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए पत्रिका के इस अंक का कलेवर लघु है जिसे पाठकों की संस्तुति और प्रोत्साहन से धीरे-धीरे वृहद् आकार दिया जाएगा। पत्रिका प्रकाशन में प्रतिनिधि सभा के प्रधान समादरणीय डॉ. शिव कुमार शर्मा, कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी, महासचिव श्री उपेन्द्र शर्मा, गोस्वामी सरदारी लाल, डॉ. देशबन्धु, अर्थ एवं कार्यालय मंत्री डॉ. आर. पी. विज के आशीर्वाद ने हमारा मार्गदर्शन किया है। एतदर्थ सम्पादक मंडल इनके प्रति आभार व्यक्त करता है।

विनीत

डॉ. नंद किशोर शर्मा

श्री सनातन धर्म जगत् के युगपुरुष : त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी

इस संसार में करोड़ों मनुष्य जन्म लेते और मरते रहते हैं, कभी-कभी ही ऐसे महापुरुषों का जन्म होता है जो अपने सर्वकल्याणकारी कर्मों द्वारा समाज को एक अभिनव दिशा प्रदान कर एक नए युग की स्थापना करते हैं और इस तरह इतिहास धारा में एक नया अध्याय लिख जाते हैं। ऐसे ही महापुरुषों को युगपुरुष कहा जाता है। पुण्य भूमि भारत में ऐसे युग पुरुषों की एक पूरी परम्परा मिलती है जिन्होंने राष्ट्र, समाज, धर्म, राजनीति, संस्कृति, साहित्य आदि विविध क्षेत्रों में अनुपम श्लाघनीय कार्य किए और अमर हो गए। त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी भी ऐसे ही युगपुरुष थे जो सनातन धर्म के आकाश पर एक सूर्य की भांति उदित हुए और अज्ञान, अशिक्षा, भय तथा नास्तिकता के अन्धकार को दूर कर ज्ञान, आस्तिकता, निर्भयता और शिक्षा का प्रखर प्रकाश फैला गए। महामना मदनमोहन मालवीय जी तथा व्याख्यान वाचस्पति पं. दीनदयालु जी की आज्ञा से गोस्वामी जी ने सनातन धर्म का पुनरुत्थान एक आंदोलन की भांति किया और उसका सार्वभौम, सर्वहितकारी मण्डनात्मक रूप विश्व के सामने प्रस्तुत किया।

गोस्वामी गणेशदत्त जी का जन्म संवत् 1946 के कार्तिक मास की नौंवी तिथि को (अक्तूबर 1889) को चन्द्रभागा (चिनाब) नदी के तट पर स्थित प्राचीन तीर्थस्थान चन्योट में (अब पाकिस्तान में) एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण वंश में हुआ। उनके पिता गोस्वामी मूलचन्द कर्मकाण्डी, ईश्वरभक्त विद्वान ब्राह्मण थे और माता निहालदेवी भी अत्यंत धार्मिक, सरल महिला थी। माता से सुने मीरा, सूरदास, भक्तमाल और जपुजी साहब के अनेक पद्य बालक गणेशदत्त को 6-7 वर्ष की आयु तक ही कंठस्थ हो गए थे।

7 वर्ष की अवस्था में शिक्षा आरम्भ हुई तो गोस्वामी जी ने उस समय सफलता का पासपोर्ट समझी जाने वाली अंग्रेजी शिक्षा को छोड़कर संस्कृत पाठशाला में पढ़ना पसंद किया। बालस्वभाव वश वे समवयस्कों के साथ कबड्डी खेलते, नदी में तैरते और अन्य अनेक रोमांचक कार्य करते। पर साथ-साथ किसी अन्तःप्रेरणा के वशीभूत हो जंगलों में घंटों प्रकृति के सान्निध्य में रहते और नदीतट की गुफाओं में रहने वाले साधु संन्यासियों से योगासन और प्राणायाम आदि सीखते।

15 वर्ष की अवस्था में सन् 1904 में गोस्वामी जी ने लाहौर के ओरिएण्टल कॉलेज की संस्कृत प्राज्ञ श्रेणी में प्रवेश प्राप्त किया। लाहौर उस समय अनेक प्रकार की गतिविधियों का केन्द्र था। व्याख्यान वाचस्पति दीनदयालु शर्मा, महात्मा मुंशीराम, स्वामी सत्यदेव, स्वामी रामतीर्थ, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, महामना मदनमोहन मालवीय जैसे अनेक महान धार्मिक तथा राजनीतिक व्यक्तित्वों का वहां आवागमन होता रहता था। युवा होते गणेशदत्त इन सब महानुभावों के जलसे-जुलूसों में शमिल होते, सेवा करते और कई बार भाषणों का आयोजन भी करते। कॉलेज में भी गोस्वामी जी ने **छात्र प्रबोधिनी सभा** बना कर नौकायन, फुटबॉल और रोगी तथा निर्धन छात्रों की सेवा सहायता आदि कार्यक्रम चलाए। अपनी पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ उन्होंने अनेक संतों, विचारकों, सुधारकों, महापुरुषों के जीवन-चरित्र और उपदेश भी पढ़ डाले। इन में स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी रामतीर्थ ने उन्हें सर्वाधिक प्रभावित किया। सामान्य जीवन से गोस्वामी जी का वैराग्य देखकर माता-पिता चिंतित हो गए और अत्यन्त आग्रह कर पार्वती देवी से उनका विवाह करवा दिया। संतोषधन से परिपूर्ण पत्नी ने गोस्वामी जी की गतिविधियों पर कभी आपत्ति नहीं की। पर गोस्वामी जी अधिक समय तक दो नावों पर पांव रख कर न चल सके। उन्होंने सन् 1917 में 28 वर्ष की आयु में पत्नी की अनुमति ले कर गृहस्थ त्याग दिया और लायलपुर आकर नगर से बाहर साधुवेला में रहने लगे। प्रवचन और कथावाचन की अनूठी शैली के कारण गोस्वामी जी शीघ्र ही नगर में प्रसिद्ध हो गए।

सनातन धर्म के प्रचार के लिए गोस्वामी जी ने 'सनातन धर्म प्रचारिणी सभा' का गठन किया। इसी सभा के अधीन उन्होंने मातृभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए हिन्दी की रात्रि पाठशाला प्रारम्भ की। इस पाठशाला में जब सैंकड़ों विद्यार्थी आने लगे तो वाचनालय खुला। वाचनालय से दो तीन सौ व्यक्ति रोज लाभ उठाने लगे तो महावीर दल स्थापित हुआ, सत्संग आरम्भ हुआ और देखते-2 विशाल सनातन धर्म भवन बन गया। फिर एक-एक कर सनातन धर्म कन्या पाठशाला, सनातन धर्म हाई स्कूल और भारतीय गुरुकुल पद्धति पर सुरम्य नदी तट पर ऋषिकुल स्थापित हो गए। चार-पांच वर्ष में इतना संगठन और निर्माण किसी चमत्कार से कम न था। पर इस चमत्कार के पीछे गोस्वामी जी की त्यागपूर्ण सेवा और कड़ी मेहनत थी। उन्होंने स्वयं कनस्तर पीटकर रात्रि पाठशाला खुलने की सूचना नगर भर को दी, लालटेनें जलाई, पीने का पानी भरा, डिब्बे पर हिन्दी प्रचार लिखकर एक-एक पैसा एकत्रित किया और सबसे बड़ी बात - ऐसे व्यंग्यबाण भी सहे- ''यह नौजवान मुस्टंडा मेहनत नहीं करता, अपनी रोटी के लिए हिन्दी के नाम पर भीख मांगता फिरता है।''

उधर लाहौर में 1916 में सनातन धर्म कॉलेज स्थापित हो गया था जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अम्बाला छावनी में पुनः स्थापित हुआ और इस वर्ष गौरवमय इतिहास के 100 वर्ष पूर्ण कर अपना शताब्दी समारोह मना रहा है। सन् 1921 में मालवीय जी तथा पं. दीनदयालु जी की प्रेरणा से रायबहादुर लाला रामसरणदास की अध्यक्षता में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा का गठन भी हो गया था। इसके अन्तर्गत 10-11 सनातन धर्म स्कूल भी खोले गए। पर दो वर्ष तक सभा का काम शिथिल ही चल रहा था।

सन् 1923 में सरगोधा में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा का वह ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ जिस में गोस्वामी जी अपने साथियों के साथ भाग लेने गए और पं. दीनदयालु जी के आह्वान पर स्वयं को प्रतिनिधि सभा के कार्यों के लिए प्रस्तुत कर दिया। सर्वसम्मति से युवा गणेशदत्त को सभा का महामंत्री निर्वाचित कर दिया गया। गोस्वामी जी ने चार डेस्कों और 500 रुपयों से सभा का काम शुरू किया।

सन् 1927 में हरिद्वार में महाकुंभ के अवसर पर गोस्वामी जी की प्रार्थना पर महामना मालवीय जी ने उन्हें अपना एक मात्र मंत्रदीक्षित शिष्य बनाया और उन से निष्काम कर्मयोग में जीवन बिताने और जनता का पैसा अपने शरीर पर न लगाने का वचन लिया। गोस्वामी जी मृत्युपर्यन्त इन वचनों के प्रति सच्चे रहे। हमेशा तीन घरों से मांग कर खाया और तीन ही वस्त्र पहने।

नवयुवा गणेशदत्त को उत्तर पश्चिमी भारत में हिन्दुओं की दयनीय दशा की भी बहुत कुछ समझ आने लगी थी। उस मुस्लिम बहुल क्षेत्र में अंग्रेजी शासन की जड़ें काफी मजबूत थीं। 'फूट डालो-राज करो' की नीति के चलते वे हिन्दु-मुस्लिम द्वेष के बीज भी बो रहे थे। यहां एक ओर तो वे मौलवी थे जो संपूर्ण भारत को इस्लाम में डुबो देने का स्वप्न देख रहे थे, दूसरी ओर इसाई मिशनरी थे जो बड़े पैमाने पर अभावग्रस्त हिन्दुओं को सहायता का लालच देकर धर्म परिवर्तन का अपना कार्यक्रम चला रहे थे। इनका सामना आर्यसमाज और ब्रह्मसमाज कुछ सीमा तक कर रहे थे पर वे भी सुधारों की झोंक में उपासना की सरल पद्धति देने में असमर्थ हो रहे थे और जनता की सहज श्रद्धा प्रवृत्ति पर ही प्रहार कर रहे थे। कुछ अन्य हिन्दु और सनातन धर्मी संगठन भी थे पर वे भी शास्त्रार्थ, खण्डन-मण्डन, अर्थाभाव आदि के चक्रव्यूह में फंस कर प्रभावशाली कार्य करने में सफल नहीं हो पा रहे थे। सर्वत्र उर्दू का बोलबाला था। हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी से अनभिज्ञ हिन्दु अपने धर्मग्रन्थ पढ़ने में अक्षम थे। ऐसे वातावरण में इस पूरे क्षेत्र पंजाब, सीमाप्रान्त, बलूचिस्तान के हिन्दुओं में हीन भावना छा गई थी। स्वयं को हिन्दु कहते भी वे शर्म का अनुभव करते थे।

यह सब देखकर गोस्वामी जी यह समझ गए कि उक्त दशा को सुधारने के लिए भाषणों और शास्त्रार्थों की नहीं अपितु लगन से काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने अविलम्ब कार्य आरम्भ कर दिया। मालवीय जी के हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रभावित हो कर 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' का गठन किया। लाहौर के सभी कॉलेजों के

उत्साही छात्रों को सदस्य बना कर छुट्टियों में हिन्दी-शिक्षण का कार्यक्रम चलाया और सैंकड़ों लोगों को देवनागरी सिखाई। इन सब कार्यों में अधिक रुचि लेने के कारण गोस्वामी जी विशारद दूसरे प्रयास में उत्तीर्ण कर सके और फिर शास्त्री की परीक्षा में अनुत्तीर्ण रह गए। तब गम्भीर मानस मंथन के उपरान्त गोस्वामी जी ने पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा देश, समाज और धर्म की सेवा करने का कठोर व्रत ग्रहण कर लिया। उन्होंने लाखों-करोड़ों रुपया एकत्रित कर सेवाकार्यों पर लगा दिया पर स्वयं पैसे को हाथ भी न लगाया। हर वर्ष वे सर्दी के चार मास उत्तरकाशी में तपस्या करते और आठ महीने धर्म और समाज का कार्य करते।

अपने अनथक प्रयत्नों, त्याग और तपस्या से परिपूर्ण निष्काम कर्मयोग द्वारा गोस्वामी जी ने सनातन धर्म सभा के अंकुर को वटवृक्ष के रूप में परिणत कर दिया। सनातन धर्म ने रचनात्मक दिशा ग्रहण कर एक ऐसे प्रबल आन्दोलन का रूप धारण कर लिया जिसमें जन साधारण के साथ-2 चोटी के नेता, विद्वान, धनकुबेर, उपदेशक, भजनानन्दी आदि सभी वर्गों के लोग एक ही मंच पर एकत्रित हो गए।

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के कार्य को गोस्वामी जी ने विभिन्न विभागों में बांटा। आरम्भ में धर्मप्रचार शिक्षा, महावीर दल और गोरक्षा विभाग बनाए। कुछ समय में अन्त्यजोद्धार, मन्दिर सुधार, विद्वत् परिषद्, प्रकाशन, प्रायश्चित्त, ग्राम सुधार और विदेश विभाग खुलने से विभागों की कुल संख्या 11 हो गई।

धर्मप्रचार विभाग के अन्तर्गत गोस्वामी जी ने स्थान-स्थान पर सनातन धर्म सभाएं खोल कर रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्रि आदि उत्सव और पर्व मनाने, श्रीमद्‌भगवद्‌गीता, रामायण आदि धर्मग्रन्थों के पाठ, स्त्री सत्संग और कीर्तन आदि की परम्परा डाली। इसके लिए 80 के लगभग उपदेशक, धर्मप्रचारक और संगीतज्ञ भजनीक स्थायी तथा आनरेरी रूप में स्थान-स्थान पर कार्यक्रम करते रहते थे।

शिक्षा विभाग को गोस्वामी जी धर्मप्रचार के बराबर महत्त्व देते थे और इसीलिए उन्होंने शिक्षा संस्थाओं का जाल सा संपूर्ण उत्तर पश्चिमी भारत में बिछा दिया और सन् 1947 तक 6 डिग्री कॉलेजों, 130 हाई स्कूलों, 4 ऋषिकुलों, 150 संस्कृत विद्यालयों और 300 कन्या विद्यालयों की स्थापना तूफानी गति से हो गई।

महावीर दल के अन्तर्गत गोस्वामी जी ने हजारों स्वयं सेवकों की विशाल सेना निर्मित की जो मेले त्योहार में, आपत्ति-विपत्ति में जन-साधारण की सेवा में तत्पर रहती थी। प्लेग महामारी हो या बंगाल का अकाल, क्वेटा का भूकंप हो या पंजाब की बाढ़, कुम्भादि महापर्व हो या शिवमन्दिर दिल्ली जैसे सत्याग्रह-सर्वत्र सेवा की परीक्षा में महावीर दल कसौटी पर खरा उतरता रहा।

अन्त्यजोद्धार विभाग के अन्तर्गत गोस्वामी जी ने विद्वत् परिषद् द्वारा शास्त्रानुमोदित करवा कर हरिजनों को मन्दिर प्रवेश, देवदर्शन, सार्वजनिक कुएं का प्रयोग, स्कूल, सत्संग आदि में प्रवेश के अधिकार दिलवाए और जगह-जगह घूम कर इस का प्रचार किया। वास्तव में गांधी जी के हरिजन आन्दोलन की रीढ़ गोस्वामी जी ही थे। इस प्रयास से मुस्लिम और इसाई मिशनरियों द्वारा सवर्ण हिन्दुओं की उपेक्षा से पीड़ित हरिजनों को अपनी झोली में समेट लेने की योजनाओं पर रोक लग गई।

मन्दिर सुधार विभाग के अन्तर्गत गोस्वामी जी ने मन्दिरों को महन्तों आदि के व्यक्तिगत कब्जे से मुक्त करवाने के लिए अनथक प्रयास किए। 1940 में तो मन्दिर सुधार बिल भी पास करवाया।

गोरक्षा विभाग के अन्तर्गत गोस्वामी जी ने गायों की हत्या रूकवाने का अभियान चलाया और डेरी प्रणाली पर गौशालाएं स्थापित की।

प्रायश्चित्त विभाग की स्थापना कर गोस्वामी जी ने मालवीय जी के आदेश से यह व्यवस्था कराई कि धोखे या लालच से धर्मान्तरण कर गए लोग चाहें तो प्रायश्चित्त कर वापिस सनातनधर्मी बन सकें।

विद्वत् परिषद् प्रतिनिधि सभा का एक महत्त्वपूर्ण अंग था जिसे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति वाले 48 दिग्गज विद्वानों की सेवाएं प्राप्त थी। यह परिषद् पर्वों व्रतों आदि की सही तिथि का निर्धारण तो करती ही थी शास्त्रों के आधार पर 'हरिजनों को मन्दिर प्रवेश' जैसे महत्त्वपूर्ण निर्णय भी करती थी।

प्रकाशन विभाग आरम्भ कर गोस्वामी जी ने जागृति, भीष्म, वीर भारत, विश्वबन्धु जैसे समाचार पत्र प्रकाशित करवाए।

विदेश विभाग के अन्तर्गत गोस्वामी जी ने अपने कई सहयोगियों को ट्रिनीडाड, पूर्वी अफ्रीका आदि देशों में भेजा, वहां के हिन्दुओं की तकलीफें दूर करने का प्रयास किया और वहां अनेक सनातन धर्म सभाएं स्थापित की।

गोस्वामी जी ने दीन दुखियों, अनाथों, विधवाओं, असहाय विद्यार्थियों आदि की सेवा सहायता के लिए विशेष बजट रखा था। इसी के अन्तर्गत जेलयात्रा पर गए स्वतन्त्रता सेनानियों के परिवारों के भरण-पोषण का उत्तरदायित्व भी गोस्वामी जी मौन भाव से निभाते रहे।

अपने कार्यों के लिए इस त्यागी ब्राह्मण को कभी धन की कमी नहीं रही। वे जो संकल्प कर लेते थे उस की पूर्ति के लिए जनता जनार्दन से लेकर बड़े-बड़े धनकुबेर, राजा महाराजा अपने खजाने खोल देते थे। अहमदाबाद, बम्बई, कलकत्ता तक के व्यापारियों से गोस्वामी जी ने लाखों रुपये एकत्रित कर कल्याण कार्यों में लगाए।

अपने शिष्य के कार्यों से सन्तुष्ट मालवीय जी ने उन का कार्यक्षेत्र विस्तृत करने के लिए अखिल भारतीय सनातन धर्म महासभा के महामन्त्री का कार्यभार सौंप दिया जिसे शिरोधार्य कर गोस्वामी जी ने कार्य करना आरम्भ कर दिया था।

अपनी हिन्दी सेवा के लिए गोस्वामी जी को अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन जयपुर अधिवेशन का सभापति बनाया गया।

4 अगस्त 1947 को अंग्रजों ने भारत के दो हिस्से कर उनकी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। गोस्वामी जी गांधी, नेहरू, राजेन्द्रप्रसाद, सरदार पटेल आदि से मिले और स्वतंत्रता का मुहूर्त निकलवाया और तदनुसार रात के 12 बजे नेहरू जी, पटेल आदि से विधिवत् पूजन करवाकर देश को स्वतंत्रता के नवयुग में प्रवेश दिलवाया। उस समय के भयानक दंगों और मारकाट से दुःखी गांधी जी ने जब आमरण अनशन रख लिया तो उसे तुड़वाने के लिए हिन्दुओं की ओर से गोस्वामी जी ने ही हस्ताक्षर किए थे। यही नहीं उन्होंने अनेक राजाओं को विलय के लिए राजी कर सरदार पटेल की भी बड़ी सहायता की थी। पाकिस्तान से लुट पिट कर आ रहे शरणार्थियों के लिए गोस्वामी जी ने स्थान-स्थान पर सहायता शिविर खोले। भोजन-वस्त्र आदि का प्रबन्ध किया। सैंकड़ों कन्याओं के विवाह करवाए और युवकों को नौकरियां दिलवाई। गोस्वामी जी ने शरणार्थियों को पुरुषार्थी कह कर नए सिरे से जीवन जीने की प्रेरणा दी।

शरणार्थी समस्या कुछ संभली तो गोस्वामी जी ने सभा के पुनर्गठन की ओर ध्यान दिया। उनकी वर्षों की कड़ी मेहनत और सेवा कार्य सुनहरे सपने की तरह बिखर गए थे। लगभग एक करोड़ की अचल सम्पत्ति पाकिस्तान के पेट में चली गई थी। 675 में से 436 सभाएं, 500 में से 375 महावीर दल, 6 में से 5 डिग्री कॉलेज और अधिकतर पाठशालाएं उधर ही थे। पर गोस्वामी जी एक पल के लिए भी हताश नहीं हुए। अमित उत्साह और संकल्पशक्ति की संजीवनी से वे सभा के कार्यों में नए प्राण फूंकने लगे।

सन् 1950 में लुधियाना में सभा का अधिवेशन हुआ। बिछुड़े सहकर्मी एकत्रित हुए। भरतमिलाप का दृश्य उपस्थित हो गया। नये कार्यों की योजनाएं बनी। अगले 9 वर्ष गोस्वामी जी ने फिर से अपनी कर्म गति तूफानी

कर दी। लाहौर का भूपेन्द्र भवन दिल्ली में, लाहौर का सनातन धर्म कॉलेज अम्बाला छावनी में, लायलपुर का ऋषिकुल हरिद्वार में, कटासराज का संस्कृत विद्यालय कुरुक्षेत्र में पुनस्थापित हुए। इस के अतिरिक्त 40 हाई स्कूल, 9 डिग्री कॉलेज, 25 कन्या पाठशालाएं, 2 ऋषिकुल, सप्तर्षि आश्रम और 80 मंदिर नई संस्थाओं के रूप में स्थापित हो गए।

हरिद्वार का सप्तर्षि आश्रम गोस्वामी जी की अन्तिम कृति था। उन्होंने सप्तर्षियों की तपोभूमि, प्राचीन तीर्थ सप्तसरोवर की खोज तथा पहचान की और इस का पुनरुद्धार किया। इस आश्रम का नक्शा भी स्वयं ही बना कर उन्होंने गंगेश्वर महादेव मन्दिर, सप्तर्षि मन्दिर, सत्संग भवन, अन्नपूर्णा भंडार, संस्कृत विद्यालय, यज्ञशाला, मालवीय जी का स्मृति मन्दिर, आयुर्वैदिक औषधालय, सप्तर्षियों और उनकी धर्म पत्नियों के नाम से 14 कुटियाओं आदि का निर्माण करवाया।

13 अप्रैल 1959 को प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के हाथों सप्तर्षि आश्रम के संस्कृत विद्यालय और रामतीर्थ सत्संग भवन का उद्‌घाटन हुआ।

इस सप्तर्षि आश्रम में ही 10 जून 1959 को त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी इस असार संसार को त्याग ब्रह्मलीन हो गए।

जल में कमल की भांति गोस्वामी जी अपने कर्मों से भी सदा अलिप्त रहे। सभी कर्म भगवान के समझ कर किये और उन का फल भी भगवान को ही अर्पित किया। किसी संस्था के साथ उन्होंने अपना नाम नहीं जुड़ने दिया, उन के ब्रह्मलीन होने के बाद ही यह संभव हो सका। चण्डीगढ़ में गोस्वामी गणेशदत्त भवन तथा डिग्री कॉलेज तथा हिमाचल प्रदेश में बैजनाथ, राजपुर, स्पाटु, नगरोटा बगवां में भी उन के नाम से डिग्री कॉलेज खुले। पलवल और हरियाणा (होशियारपुर) के कॉलेजों के नाम भी गोस्वामी जी के नाम पर रखे गए हैं। हरिद्वार में उन के समाधि स्थल का निर्माण हुआ और 1997 में समाधिस्थल वाले गंगा तट पर भव्य गोस्वामी गणेशदत्त घाट भी बन कर तैयार हो गया।

गोस्वामी जी ने अपनी कर्मठता से अपने अनुयायियों की एक पूरी पीढ़ी सनातन धर्म की सेवा के लिए तैयार कर दी थी, जो अपनी तरुणावस्था से ही उनके साथ कार्य करती रही। इन में से 12 को सन् 1946 में आजीवन सदस्य बना दिया गया था। - प्रो. वशिष्ठ, लाला शिवराम सेवक, पं. चिरंजीलाल, श्री लद्धासिंह भंडारी, पं. बिशनदास शर्मा, लाला चमन लाल कतयाल, श्री मेहता जगन्नाथदत्त, पं. अमरनाथ शर्मा, पं. भगीरथलाल, लाला जगन्नाथ धौन, पं. जगन्नाथ शर्मा, पं. विष्णुदत्त शुक्ल। इस के अतिरिक्त गो. गिरधारी लाल, ज्ञान चन्द खरबन्दा, ब्रह्मचारी हरिजीवन, पं. यज्ञदत्त शर्मा, पं. सुखदेव शर्मा आदि अनेक लोग तन, मन, धन से सभा के माध्यम से धर्म और समाज की सेवा गोस्वामी जी के बताए मार्ग पर चल कर करते रहे। आज उक्त महानुभावों की सम्पूर्ण पीढ़ी ब्रह्मलीन हो चुकी है और इन से अगली पीढ़ी पूरे प्राणपण से गोस्वामी जी की धरोहर की रक्षा करने में जुटी है। आज सम्पूर्ण पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि में सैकड़ों-हजारों सनातन धर्म सभाएं, मन्दिर, स्कूल, कॉलेज, महावीर दल तथा अन्य संस्थाएं कार्य कर रही हैं जिन के मूल में गोस्वामी जी की प्रेरणा विद्यमान है।

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी जैसे युगपुरुष तो एक युग में एक ही होते हैं। उन जैसे त्याग, तपपूर्ण, कर्मशील व्यक्तित्व मिलने बहुत कठिन हैं। यदि हम सब सनातनधर्मी अपने स्वार्थ को थोड़ा भूलकर, थोड़े से त्याग, थोड़े से तप से, थोड़े से कर्म से भी सनातन धर्म की सेवा कर सकें तो गोस्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर पाएंगे।

जननायकों की दृष्टि में त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी

धर्मगुरु

गोस्वामी जी का जीवन जनता विशेषतः शिक्षा के लिए समर्पित था। वह एक कर्मठ, धार्मिक और सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने अपने परिश्रम और प्रभाव के बल पर अनेक सार्वजनिक संस्थानों और शिक्षा-संस्थानों और शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना की। विशेषकर पंजाब, दिल्ली और पश्चिमी उत्तरप्रदेश में वे अपनी समाज-सेवा के लिए चिरस्मरणीय रहेंगे। ....

गोस्वामी जी महाराज मेरे धर्मगुरु थे, उन्होंने आध्यात्मिक मामलों में सदा मुझे राह दिखाई। धर्म के मामले में मैं हमेशा उनकी तरफ देखता था। उन जैसा कर्मयोगी, त्यागी और निष्काम जनसेवक सैकड़ों वर्षों में एक-आध बार ही जन्म लेता है। मैंने संकट के समय में भी उन्हें हमेशा हौसलेमंद और भगवान के भरोसे पर काम करते देखा। उनकी खाली जगह कभी पूरी न होगी।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति

गहरे दोस्त

गोस्वामी जी के लिए मेरे दिल में बड़ा प्रेम और श्रद्धा रही है। उनके साथ गहरे दोस्ताना सम्बन्धों पर मुझे गर्व है। सार्वजनिक प्रश्नों पर मैं अक्सर उनसे सलाह लेता था। पिछले कुछ वर्षों में तो मैं उनके बहुत करीब आ गया था।

गोस्वामी जी बहुत बड़े देशभक्त और सुधारक थे। उनकी सादगी और कर्त्तव्यपरायणता श्लाघनीय थी।

पंडित जवाहर लाल नेहरू

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री

महामना के सच्चे शिष्य

अस्वस्थ हूँ। गोस्वामी जी की बरसी पर पहुँचना असंभव हो गया है। वह बड़े-से-बड़े काम को अनायास सिद्ध कर देने वाले आडम्बरशून्य नेता थे। उनकी सरलता और सादगी मुग्ध करने वाली थी। अपने आपको वे आजीवन सिपाही और कार्यकर्त्ता ही समझते रहे। हिन्दी के लिए जो काम वह कर गये हैं वही उनकी कीर्ति को स्थायी कर देने के लिए पर्याप्त है। महामना मालवीय जी महाराज के सच्चे शिष्य के रूप में उनकी स्मृति सदा स्मरणीय और आदरणीय रहेगी।

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

सर्वसाधारण के लिए

गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज की बरसी का निमंत्रण मिला। इन दिनों का कार्यक्रम पहले ही न बन गया होता तो हरिद्वार पहुंच कर श्रद्धांजलि अर्पित करता। गोस्वामी जी सर्वसाधारण के लिए ग्राह्य धर्म के व्याख्याता, रचनात्मक समाजसेवी और हिन्दी के अनन्य महारथी थे। भारत का मस्तक ऐसे सपूतों से ही उज्ज्वल है।

श्री लाल बहादुर शास्त्री
प्रधानमन्त्री, भारत

अगले मोर्चे के योद्धा

गोस्वामी गणेशदत्त जी प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता और सुधारक थे। शिक्षा, विशेषतः स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने अगले मोर्चे पर काम किया और उत्तर भारत में कितनी ही शिक्षा संस्थाएं स्थापित की। बिहार में सन् 1933 वाले भयंकर भूकंप के बाद गोस्वामी जी ने जनता की बहुमूल्य सेवा की थी। बंगाल के भयानक अकाल में भी उनकी सेवाएँ अग्रगण्य रहीं।

विभाजन के उपरान्त उजड़े हुए भाइयों को सहायता पहुंचाने के लिए गोस्वामी जी ने अद्वितीय सेवा की। इधर उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था फिर भी संस्थाओं को उनका सक्रिय सहयोग मिलता रहता था।

गोस्वामी जी के देहांत ने सबको गहरे शोक से भर दिया है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी
कांग्रेस-अध्यक्ष

परमपूज्य

परमपूज्य श्री गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज की सेवाएं सब जानते हैं। अपने निजी जीवन तथा सामाजिक कार्यों में उनके समरण से हम प्रेरणा पाते रहें।

वह मूल रूप से एक रचनात्मक कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने सामाजिक जीवन का संगठन कर उसे पुनः जीवन दिया और उसमें धर्म की भावना तथा सेवा और बलिदान के उँचे आदर्श स्थापित किए।

विश्वास है कि गोस्वामी के जीवन चरित्र एवं कार्य के सम्बंध में जो भी कुछ कहा जाएगा वह हमारे समाज का मार्गदर्शन करेगा और सद्कार्य के लिए प्रेरणा देगा।

श्री गुलजारी लाल नंदा
गृहमन्त्री, भारत सरकार

विभाजन की विकराल आंधी में सेवा

हरिद्वार में राष्ट्रपति महात्मा गांधी और प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के साथ विचार विमर्श करते हुए त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी।

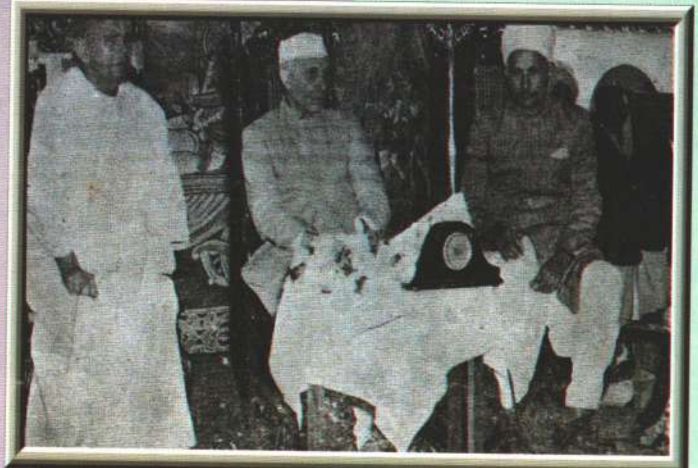

श्री लक्ष्मीनारायण (बिड़ला) मन्दिर नई दिल्ली में दानवीर राजा श्री सेठ जुगल किशोर बिड़ला एवं पं. जवाहर लाल नेहरू के साथ त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी।

सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में

सभा के प्रधान लाला सरदारी लाल जी तलवाड़ व उपप्रधान दिवान हरिकृष्ण दास जी के साथ राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का स्वागत करते हुए त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी।

पंडित जवाहर लाल नेहरू के साथ त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी।

सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में...

महाराजा राणा सर उदयभानू सिंह धोलपुर नरेश,
महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह दरभंगा और
रायबहादुर सेठ गुजरमल मोदी के साथ
परामर्श करते हुए त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी।

मातृ सेवा सदन नई दिल्ली के शिलान्यास के अवसर पर
भाषण देते त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी।

सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार का शिलान्यास

श्री सेठ मंगलदास गिरिधरदास पारीख अहमदाबाद
की धर्मपत्नी माता कंचन गौरी, श्री यशोधर गौवर्धन दास और
सेठ नटवर लाल गौवर्धन दास परिवार सहित
त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी की प्रतीक्षा में।

प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं
गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा के साथ
त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी की सार्वजनिक सम्मेलन में
अन्तिम उपस्थिति तिथि 3 अप्रैल 1959।